This question paper contains **8+4** printed pages]

आपका अनुक्रमांक ....

2685

B.A. (Programme) II/III **D-I**

HINDI LANGUAGE (B)—Paper II

हिंदी भाषा (ख) – प्रश्न-पत्र II

(प्रवेश-वर्ष 2006/2007 और तत्पश्चात्—Non-formal Cell/SOL

के विद्यार्थियों के लिए)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. निम्नलिखित अवतरणों को ध्यानपूर्वक पढ़िये और किन्हीं **दो** के नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×10=20

(क) इत्यादि यूँ तो हर जोखिम से डरते थे

लेकिन कभी-कभी जब वे डरना छोड़ देते थे

तो बाकी सब उनसे डरने लगते थे

P.T.O.

इत्यादि ही करने को वो सारे काम करते थे

जिनसे देश और दुनिया चलती थी

हालाँकि उन्हें ऐसा लगता था कि वो ये सारे काम

सिर्फ़ अपना परिवार चलाने को करते हैं

(*i*) ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं और किस कविता से उद्धृत हैं ?

(*ii*) 'इत्यादि' शब्द का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

(*iii*) 'लेकिन कभी-कभी जब वे डरना छोड़ देते थे, तो बाकी सब उनसे डरने लगते थे।' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(*iv*) देश और दुनिया को चलाने वाले 'इत्यादि' को ऐसा क्यों लगता है कि वे अपना काम सिर्फ परिवार चलाने के लिए करते हैं ?

(ख) प्राय: ही किन्हीं के घर साहित्य मंडलियाँ जुटतीं। पुराने और नये लोगों का जमावड़ा देखने लायक, सुनने लायक! रत्नाकर जी का वह विशाल शरीर—उनकी मोटी गरदन से जब मोटे स्वर में कवित्त की धारा फूटती, तो लगता, सचमुच हमारे सामने ही 'गंगावतरण' हो रहा है। हरिऔध जी करुणा की धारा बहाते-बहाते स्वभावत: ही अपनी आँखों में सावन-भादों उमड़ा लेते। लाला भगवानदीन जी की बात ही निराली—वैसा फक्कड़ साहित्यिक अब कहाँ देखने को मिलता है! पिंगल और अलंकार के आचार्य के रूप में तथा एक उच्चकोटि के साहित्य शिक्षक के रूप में तो वह प्रसिद्ध थे ही! गया की 'लक्ष्मी' का बहुत दिनों तक संपादन किया था, अत: हम

लोग उन्हें अपना ही समझते। गोस्वामी जी की फ़बन ही निराली थी—बुढ़ापे में भी आँखों में सुरमा लगाने से नहीं चूकते थे तथा बच्चों को भी दो चिकोटी काटे बिना नहीं छोड़ते थे।

(*i*) यह अनुच्छेद किस पाठ से लिया गया है ? पाठ के लेखक का नाम भी लिखिए।

(*ii*) इस अवतरण में लेखक ने किन-किन साहित्यकारों की विशेषताएँ बताई हैं ?

(*iii*) हरिऔधजी और लाला भगवानदीन के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

(*iv*) 'पुराने और नये लोगों का जमावड़ा देखने लायक, सुनने लायक!'— उपर्युक्त अनुच्छेद के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) दो चीज़ें समझ में आ रही हैं कि एक तो ज़ीवन में आनंद के लिए मुक्ति जरूरी है। जो जितने ही बंधन में होता है, उसके हिस्से में आनंद उतना ही थोड़ा होता है। कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि कई स्त्रियों का जीवन पूरा हो जाता है या ख़त्म हो जाता है लेकिन वे आनंद की स्वाभाविक अनुभूति से वंचित रहती हैं। हमारे कथन का आशय यह नहीं है कि सारे मर्दों की जिंदगी आनंद से लबालब रहती है। बल्कि कहने का आशय यही है कि जो जितना अधिक बंधक होगा उतना ही वंचित होगा। गुलामी मानसिक भी हो सकती है। दूसरों की नकल के सहारे आनंद पाने का करतब भी गुलामी है जो कि नवधनाढ्य समुदाय को दबोचे हुए है। किटी पार्टियाँ,

पिकनिक मानने जाकर वहाँ फोटो खिंचाना सरीखी रूढ़ियाँ मिसाल हैं। वस्तुतः जब आप अपनी स्वतः स्फूर्त इच्छा के चलते शामिल होते हैं तभी सहज आनद हासिल होगा।

(*i*) उपर्युक्त अनुच्छेद किस लेखक के किस पाठ से लिया गया है ?

(*ii*) लेखक के अनुसार आनंद और मुक्ति का क्या संबंध है ?

(*iii*) मानसिक गुलामी से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

(*iv*) इन शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए

वंचित, बंधक, नवधनाढ्य समुदाय, स्वतःस्फूर्त इच्छा, अनुभूति।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए :

5×3=15

(*i*) 'मुक्तमंडी' में इंटरनेट ने पुस्तक प्रेमियों की मानसिकता को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

('किताबें और नया हिसाब-किताब')

(*ii*) बच्चों के लिए खेल एक मनोरंजन है, या मुक्ति का अहसास, या सहज आनंद का अनुभव ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

('वह जो यथार्थ था')

(*iii*) जगदीश बाबू को 'दाज्यू' संबोधन से क्यों चिढ़ हुई ? उनके गुस्से की मदन पर क्या प्रतिक्रिया हुई ? ('दाज्यू')

(*iv*) हिंदी और उर्दू के भाषाई प्रश्न के संबंध में गांधीजी के क्या विचार थे ?

('गांधीजी और भाषा-समस्या')

(*v*) लेखक ने नवधनाढ्य वर्ग को सामाजिक चिंता का कारण क्यों माना है ?

('नवधनाढ्य वर्ग या नये परजीवी')

3. (क) निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 3×5=15

(*i*) खड़ी बोली का सामान्य परिचय

(*ii*) राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की स्थिति

(ख) इन शब्दों के मानक रूप लिखिए :

(*i*) तुल्सी

(*ii*) दवाईयाँ

(*iii*) करूणा

(*iv*) द्रष्टि

(*v*) महेष

4. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** का पल्लवन कीजिए : 10

(*i*) पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

(*ii*) जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(*iii*) अंधेर नगरी चौपट राजा।

5. नीचे लिखे अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उचित शीर्षक देकर उसका संक्षेपण कीजिए : 10

बाज़ार न पूँजीवाद के साथ आया है और न ही मानव समुदाय के साथ हमेशा जुड़ा रहा है। जब हमारे पूर्वज

कबीलों में रहते और जगह-जगह खाद्य पदार्थों की खोज में भटकते रहते थे तब उनकी आवश्यकताएँ सीमित थीं। अधिशेष उत्पादन नगण्य था। अतः विनिमय की कोई गुंजाइश न थी। यह स्थिति पाषाण युग में तब बदली जब लोगों ने शिकार और फलमूल की खोज में भटकना छोड़ दिया और वे स्थायी रूप से एक ही जगह लंबे समय तक रहने लगे। समाज में श्रम विभाजन और विशेषीकरण आए जिससे कबीले के सदस्य अपनी योग्यता, क्षमता और दक्षता के अनुकूल कार्य-विशेष में लग गये। चूँकि अलग-अलग लोग अलग-अलग वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने लगे और सबको कमोबेश सभी वस्तुओं की जरूरत जीवन-निर्वाह के लिए थी इसलिए विनिमय का उदय हुआ जिसने बाज़ार को जन्म दिया।

6. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों का अर्थ लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 10

(*i*) थोथा चना बाजे घना

(*ii*) दीपक तले अँधेरा

(*iii*) पैर तले से ज़मीन खिसकना

(*iv*) किताबी कीड़ा होना

(*v*) पर कतरना

7. (*i*) शब्द-शक्ति का महत्व बताते हुए उसके भेदों का उल्लेख कीजिए। 4

(*ii*) 'खोलेंगे अँधेरे का ताला/एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।'—इन पंक्तियों का लक्ष्यार्थ स्पष्ट कीजिए। 4

(*iii*) 'अब सिर्फ एलबम में रहते हैं/ परिवार के सारे लोग एक साथ'—इन पंक्तियों का व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए। 4

8. (*i*) बहुभाषी कोश की परिभाषा लिखते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 4

(*ii*) नीचे लिखे शब्दों को कोश प्रविष्टि की दृष्टि से वर्णानुक्रम से सँजोइये 4

अभिप्राय, तात्पर्य, चार्वाक, चतुष्पदी, अनुस्मारक, पुरातन, तत्काल, आचार्य।